शिव अवतरण का यादगार है – महाशिवरात्रि का पर्व

भारत में जितने भी पर्व मनाये जाते हैं, सब किसी न किसी के दिव्य कर्मों के यादगार होते हैं। किसी का जन्म दिन, किसी का निर्वाण तो किसी को महान कार्यों के लिए याद किया और मनाया जाता है। परन्तु सभी त्योहारों के पीछे आध्यात्मिक रहस्य होता है। यह मनुष्य को किसी न किसी रूप में परमात्म और अध्यात्म शक्तियों के साथ जोड़ता है। ये त्योहार सृष्टि के आदि-मध्य और अन्त में घटी घटनाओं की स्मृति दिलाते हैं। महाशिवरात्रि पर्व इन पर्वों में अपना अलग और विशेष महत्व रखता है। यूँ कहें तो यह आत्मा और परमात्मा के मिलन का पर्व, युग परिवर्तन की संधि बेला है। भोलेनाथ शिव ने इस दिन आकर सृष्टि को बदलने का महान कार्य किया था। इसलिए भारत तथा भारत से बाहर के देशों में इसे सर्वसम्मति से मनाया जाता है। इस दिन पूरे विश्व के शिवमंदिरों में आराधना, पूजा और साधना बड़ी तन्मयता से की जाती है।

शिवलिंग-परमात्मा की प्रतिमा: भारत में जितने शिव के मंदिर हैं शायद ही और किसी भी देवी-देवता के हों। भारत में सुप्रसिद्ध मंदिरों में द्वादश ज्योतिर्लिंग प्रसिद्ध है। परमात्मा के अलग-अलग कार्यों के कारण उनको अनेक जगहों पर कर्त्तव्यवाचक नामों से पुकारा और याद किया जाता है। उज्जैन में महाकाल, गुजरात में सोमनाथ, वाराणसी में विश्वनाथ, अमरनाथ, मुम्बई में बबूलनाथ, नेपाल में पशुपतिनाथ, भारत के दक्षिण में रामेश्वरम आदि-आदि ये सब परमात्मा के कर्त्तव्यवाचक नाम है। परन्तु इन मंदिरों में सभी जगह केवल शिवलिंग होता है। शिवलिंग के बारे में बहुत सी भ्रांतिया है। वास्तव में 'शिव' का अर्थ कल्याणकारी तथा 'लिंग' का अर्थ चिन्ह होता है। जब मनुष्यों में आत्मिक शक्ति होती है तो अपने तीसरे नेत्र से परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को जानकर याद करते हैं। परन्तु भौतिकता की बहुलता होने पर दिव्य नेत्र से न देख पाने के कारण स्थूल में पूजा-अर्चना करना चाहते हैं इसलिए स्थूल में शिवलिंग की प्रतिमा बनाकर पूजा करते हैं। शिव सभी आत्माओं, देव-आत्माओं और महात्माओं के भी परमात्मा और पूज्य हैं। यही कारण है कि शिवलिंग की पूजा श्रीकृष्ण, मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम, प्रजापिता ब्रह्मा, श्री विष्णु और स्वयं शंकर ने भी की है। परमात्मा अजन्मे और अशरीरी हैं इसलिए उनकी स्थूल रूप में पूजा कैसे की जाये इसके लिए 'शिवलिंग' का निर्माण किया गया। शिवलिंग का रूप प्राय: काला दिखाते हैं। इसका अर्थ है कि परमात्मा पतित काली दुनिया में आते हैं और आसुरी बुराइयों से मुक्ति दिलाते हैं।

प्राय: 'शिवलिंग' पर तीन लकीरें और उसके बीच में गोल बिंदू अंकित होता है। इसका अर्थ है कि तीन देवताओं के रचयिता भी ज्योतिर्बिन्दू परमात्मा शिव हैं। इसलिए स्थूल रूप में अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए तथा पूजा-अर्चना करने के लिए शिवलिंग बनाया गया है।

परमात्मा शिव के दिव्य कर्म: वैसे तो भगवान और भक्तों के बीच अनेक कार्य होते रहते हैं। परन्तु विश्व कल्याणकारी परमपिता परमात्मा शिव पूरे कल्प में एक ही बार महान कार्य करते हैं जिनकी यादगार में शिवरात्रि मनायी जाती है। जैसा कि गीता में कहा गया है-

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मनाम् सृजाम्यहम्।। (अध्याय 4, श्लोक-7)
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।। (अध्याय 4, श्लोक-8)

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्वत: ।

त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति ममेति सोउर्जुन ।। (अध्याय-4, श्लोक-9)

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि दिव्य परमात्मा का जन्म भी दिव्य और अलौकिक है। जब संसार में घोर धर्म ग्लानि तथा अधर्म का राज होता है तब परमात्मा एक धर्म की स्थापना तथा अनेक धर्मों के विनाश के लिए इस सृष्टि पर अवतरित होते हैं। आज संसार में अनेक धर्म और अधर्म की काली साया में सारा संसार जल रहा है। आज ऐसी घटनायें समाज में घटित हो रही है जिनका जिक्र सृष्टि के किसी भी युग में नहीं किया गया है। यह धर्म की ग्लानि नहीं तो और क्या है। आज जरा अपने पट खोलकर देखिए कि क्या हो रहा है समाज में। सच ही किसी ने कहा है कि ***देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान, कितना बदल गया इंसान।*** आज पूरी मानवता अपनी इस दुर्दशा पर आंसू बहा रही है। अब इससे घोर अधर्म और क्या हो सकता है। इस अज्ञानता की रात्रि में ही परमात्मा इस सृष्टि पर अवतरित होकर एक श्रेष्ठाचारी दुनिया की स्थापना कराते हैं। इस महान कार्य का यादगार महाशिवरात्रि मनाते हैं।

कैसे मनायें शिवरात्रि: सभी देवी-देवताओं के मंदिरों में फूल-माला, दुध, धूप, अगरबत्ती तथा अन्य श्रेष्ठ पूजा सामग्री का प्रयोग करते हैं परन्तु परमात्मा के यादगार दिवस शिवरात्रि के पर्व पर भांग, धतूरा, बेलपत्र तथा अक का फूल आदि निरर्थक वस्तुओं को अर्पण करते हैं। कहते हैं कि परमात्मा इसको स्वीकार कर खुश होते हैं, इसका भी गहरा आध्यात्मिक रहस्य है। परमात्मा जब इस सृष्टि पर आते है तो यही कहते है कि बच्चे अपने अन्दर इस प्रकार की जो भी निरर्थक बुराइयां हैं, जो स्वयं को तथा दूसरों को दुख देने वाली तथा दानवता के लिए प्रेरित करने वाली हैं, उनको मुझ पर अर्पण कर मेरे से दैवी गुणों और शक्तियों को अपने जीवन में अपनाओ।

अब वर्तमान समय संसार में चारों तरफ लोगों के अन्दर सदगुण, अवगुण में बदल गये हैं, मानवता दानवता में, अहिंसा-हिंसा तथा प्रेम-नफरत में बदल गया है। इसलिए परमपिता परमात्मा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के द्वारा पुरानी दुनिया का विनाश और नयी दुनिया की स्थापना का गुप्त रूप में महान कार्य कर रहे हैं। इसलिए अब परमात्मा का आह्वान है कि हे मनुष्यात्माओं, उठों और अपने स्वधर्म तथा अपने परमपिता शिव को पहचान दैवी गुणों को धारण कर दैवी राज्य के अधिकारी बनो।

आज शिवरात्रि की सार्थकता तभी होगी जब हम विवेकसम्मत होकर वर्तमान विनाश के काल में जा रही दुनिया को पहचानकर परमात्मा के संग अपना बुद्धियोग जोड़ें तथा नयी और श्रेष्ठाचारी दुनिया के अधिकारी बनें। वरना अन्त में पछताने के सिवाय कुछ नहीं बचेगा और न ही गंगा स्नान करने और शिव के ऊपर भांग धतूरा चढ़ाने से कुछ नहीं मिलेगा यही शिवरात्रि का संदेश और अभिप्राय है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com